P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

वर्तमान साम्प्रदायिक राजनीति और कबीर की प्रासंगिकता

जगदीश चन्द्र जोशी
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लोहाघाट

सारांश

हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रतिबद्ध एवं आडम्बरपूर्ण तथा जातिवादी ताकतों का विरोध करने वाले कबीर मध्यकाल में साम्प्रदायिक सद्भावना के कवि रहे हैं। कबीर का मानना था ई"वर, खुदा या राम–रहीम सब एक ह। कबीर का उल्लेख अनेक फारसी ग्रन्थों में मिलता है। कबीर हिन्दू–मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों में आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। कबीर जनमानस को समाजविरोधी ताकतों से सचेत करते रहे। वे आज भी प्रासंगिक हैं।

मुख्य शब्द : साम्प्रदायिकता, प्रासंगिकता, दिगम्बर, प्रतिक्रियावादी, खंदक, आइने–अकबरी, अकबर–अल–आख्यार, दबिस्तानें, मुजाहिब, खजीन, अतुल असफिया।

पस्तावना

कबीर मध्यकाल में साम्प्रदायिक सद्भावना के कवि रहे हैं। कबीर ने हिन्दू, मुस्लिम एवं अन्य धर्मावलम्बियों में व्याप्त कुरीतियों एवं आडम्बरों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने वाह्याडंबरों पर तीखे प्रहार किए। वे साम्प्रदायिक ताकतों के समक्ष कभी नहीं झुके।

कबीर का पालन पोषण जुलाहा परिवार में हुआ था– ''तूँ बाम्हन मैं कासी का जुलाहा''।[1]

''रिजली साहब का अनुमान है कि यह जुलाहा जाति किसी निम्नस्तर की भारतीय जाति का मुसलमानी रूप है। सामाजिक परिस्थिति इनकी अच्छी नहीं रही और नवागत धर्म में कुछ अच्छा स्थान पा जाने की आ"ाा से इन्होंने समूह रूप म धर्मान्तर ग्रहण किया होगा। यही कारण है कि ये सैय्यद और पठानों की भांति सारे भारत वर्ष फैले हुए नहीं हैं बल्कि अपने मूल निवास स्थान में ही पाये जाते हैं।[2]

''जैसे जीवन के आध्यात्मिक, धार्मिक, दा"ार्निक एवं साधना के स्तर पर कबीर ने तत्युगीन जीवन को समन्वय का संदे"ा दिया है वैसे ही कबीर ने जीवन के व्यावहारिक स्तर पर भी अन्तर्विरोधों को मिटाने वाला समन्वयवादी दृष्टिकोण ही दिया है। कबीर को मानव–मानव की मूलतः समानता और एकता में दृढ़ वि"वास है। उन्हें वर्गगत या जन्मजात ऊँच–नीच की भावना से तीव्र घृणा है। मानव की उच्चता का आधार जन्म अथवा सम्प्रदाय नहीं, नैतिकता और सदाचार है।

'जात–पात पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि को होई' में कबीर की निष्ठा है। अन्य मतों की तरह कबीर का भी युग को यही सन्दे"ा है''।[3]

बाबू गुलाब राय ने कहा है ''ये महात्मा बड़ी स्वतंत्र प्रवत्ति के थे। ये रूढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे, इसलिए इन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्प्रदायों की खूब हँसी उड़ायी है। 'इन दोउन राह न पाई।' ये अपढ़ होते हुए भी बहुश्रुत थे।''[4]

मध्यकाल में सामाजिक भेद–भाव एक बड़ी समस्या थी। ''कबीरदास की वाणियों स जान पड़ता है कि मुसलमान होने के बाद न तो जुलाहा जाति अपने पूर्व संस्कार से एकदम मुक्त हो सकी थी और न उसकी सामाजिक मर्यादा बहुत ऊँची हो सकी थी।[5]

कबीर ने सभी धर्मों, सम्प्रदायों में प्रचलित आडम्बरों का विरोध किया। नग्न साधुओं पर नि"ाना साधते हुए कबीर कहते हैं कि ''ये लोग कपट–माया फैलाकर लोगों को ठगा करते हैं। तत्व तो ये जानते ही नहीं। मलिन वे"ा धारण किए फिरते हैं और शरीर को व्यर्थ ही कष्ट देते हैं। नंगे घूमते हैं और के"ा उखड़वा (लुंचन) देते हैं। यदि नग्न दिगम्बर को मुक्ति मिलती हो तो स्यार–कुत्तों की मुक्ति पहले होनी चाहिए।''[6]

''दीह णग्ग जइ मलिणों बेसें।
णग्गल होइ उपाडिअ केसें।।
खवणेहि जाण बिडंबिअ बेस।
अप्पण बाहिअ मोक्ख उवेसें।।
जइ णग्गा विअ होइ मुत्ति ता सुणह सिहालह।
लोमुप्पाडणे अत्थि–सिद्धि ता जुअइ णिअम्बइ।।''[7]

कबीर को मानने वालों में मुसलमान भी हैं और हिन्दू भी। 'कबीर ने प्रसिद्ध सूफी मुसलमान फकीर शेख तकी से ि"ाक्षा ली थी। वे उस सूफी फकीर को ही कबीर का गुरू मानते हैं।''[8]

'कतिपय समीक्षकों ने कबीर की एक साखी के आधार पर यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि वह हज करने कई बार मक्का भी गये थे।

'हज काबै ह्वै ह्वै गया, केती बार कबीर।
मीरा मुझमें क्या खता, मुखां न बोलै पीर।।[9]

कबीर के समय में धार्मिक, दा"ार्निक एवं साधना सम्बन्धी अनेक सम्प्रदाय चल रहे थे। इनमें आपसी अन्तर्विरोध अत्यधिक था। 'किसी तरह का सामजिक भेद–भाव सत्य का गोपन मात्र है। वेद, कुरान, धर्म और जगत, स्त्री–पुरुष का भेद सच नहीं है। यदि एक ही बिन्दु (तत्व) एक ही मलमूत्र, एक ही चर्म और एक ही गूदा है और एक ज्योति से सब उत्पन्न हैं तो कौन ब्राह्मण एवं कौन शूद्र है।'[10]

साम्प्रदायिकता समाज में जहर घोलने का काम कर रही है। 'वस्तुतः वर्तमान साम्प्रदायिकता प्रतिक्रियावादी तत्वों के लिए खंदक की लड़ाई की भांति है। इसके लिए वे धर्म और धार्मिक आस्था को वैयक्तिक क्षेत्र से हटाकर सार्वजनिक क्षेत्र के उत्सव के रूप में परिवर्तित करने में लगे हैं।

इस प्रक्रिया में अनेक नये–नये पंथों एवं सम्प्रदायों का जन्म हुआ है। रूढ़ियों में सुधार का आभास कराकर उसे और भी अधिक रूढ़ बनाया जा रहा है। फलस्वरूप साम्प्रदायिकता से सम्बन्धित नयी मानसिकता दिन–प्रतिदिन विकसित होती जा रही है और उसका प्रभाव पहले से कहीं अधिक खतरनाक सिद्ध हो रहा है।''[11]

कबीर का मानना था कि ई"वर, खुदा या राम–रहीम सब एक हैं। व्यक्ति उसे किसी नाम से भी पुकारे।

'हमरे राम रहीम करीमा,
कैसो अलह राम सति सोई।
बिसमिल मटि बिसंभर एकै,
और न दूजा कोई।।'[12]

'कबीर का उल्लेख जिन उर्दू–फारसी ग्रंथों में मिलता है, उनमें आइने अकबरी, अकबर–अल–आख्यार, दबिस्ताने मुजाहिब, खजीन अतुल असफिया उल्लेख्य हैं। आइने–अकबरी की रचना अकबर के दरबारी अबुल फजल ने सन् 1598 में की थी। इस ग्रन्थ में कबीर का उल्लेख दो स्थानों पर मिलता है। इसमें बताया गया है कि 'कबीर' हिन्दू–मुस्लिम दोनों सम्प्रदायों में आदर की दृष्टि से देख जाते थे।'[13]

साम्प्रदायिकता आज सामाजिक ही नहीं राष्ट्रीय बुराई बन चुकी है। अनेक तरह के चेहरे पहनकर सौहार्दपूर्ण वातावरण को विषाक्त कर ध्वस्त करना साम्प्रदायिकतावादी लोगों की फितरत बन चुकी है। सामाजिक एवं साम्प्रदायिक सद्भावना के लिए कबीर ने जो कुछ कहा वह उनके निरन्तर चिंतन का प्रतिफल था। वर्तमान साम्प्रदायिक राजनीति के दौर में मध्यकाल के कवि कबीर आज भी प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. गुरुग्रन्थ साहिब पद–26
2. पीपुल्स आफ इण्डिया पृष्ठ 123
3. कबीर ग्रन्थावली लेखक–भगवत स्वरूप पृ0 17
4. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास–बाबू गुलाब राय पृ0 27
5. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ0 143
6. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ0 143
7. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी पृ0 143
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास– रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 63
9. कबीर वाणी पीयूष– जयदेव सिंह, वासुदेव सिंह, पृ0 11
10. कबीर ग्रन्थावली : राजकि"ाोर शर्मा, पृ0 67
11. विभाजन की हकीकत कथा सन्दर्भ– डॉ0 मेराज अहमद, पृ0 20
12. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 147
13. कबीर वाणी पीयूष : डॉ0 जयदेव सिंह, डॉ0 वासुदेव सिंह, पृ0 16, वि"ववविद्यालय प्रका"ान वाराणसी।
14. कबीर : हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 20, राजकमल प्रका"ान, नई दिल्ली।